International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 03, March 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बुनकर समुदाय की समस्याएं एवं चुनौतियांः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

(उत्तर प्रदेश के अम्बेडकरनगर जिले के विशेष सन्दर्भ में)

[1]मोहम्मद नदीम

[2]डा0 रूपेश कुमार सिंह

भारत में हाथ से बुने हुए वस्त्र की पहचान सभी कला और शिल्प के क्षेत्र में सबसे प्राचीन एवं व्यापक है। भारत में बुनाई कार्य 5000 वर्षों से अधिक समय से होता चला आ रहा है। ऐतिहासिक रूप से भारत के कुछ प्रसिद्ध हाथ से बुने हुए वस्त्रों में बनारसी साड़ी, कच्छ की बांधनी, मध्य प्रदेश की चंदेरी साड़ी, मैसूर की जॉर्जेट, ओडिशा की संबलपुरी साड़ी, बंगाल की जामधानी साड़ी, कांचीपुरम से दक्षिण की मंदिर रेशम और अन्य शामिल हैं। 30 लाख से अधिक बुनकरों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करने वाला हथकरघा उद्योग भारत में कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता है। देश के कपड़ा उत्पादन में हथकरघा का योगदान करीब 23 फीसदी है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था एवं ग्रामीण रोजगार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हथकरघा उत्पाद देश के वस्त्र निर्यात का एक प्रमुख हिस्सा रहा है। हथकरघा से उत्पादित वस्त्र के निर्यात में साड़ी, वस्त्र एवं घरेलू साज–सज्जा के रूप में प्रमुख रहे है। (मिश्रा एवं महापात्राः 2019:325)।

भारत में हथकरघा उद्योग पारंपरिक तकनीक के शिल्प आधारित क्षेत्र का सबसे बड़ा उद्योग है, तथा इसकी कारीगरी परंपरा की जड़ें पूर्व–औपनिवेशिक हैं। हालांकि 1995–96 और 2009–10 में आयोजित दूसरी एवं तीसरी हथकरघा जनगणना के बीच इस उद्योग में तेजी से गिरावट देखी गई है। 1995–96 में 34.87 लाख करघों के सापेक्ष 65.5 लाख श्रमिकों को रोजगार मिला, जबकि 2009–10 में हथकरघा क्षेत्र में 23.77 लाख हथकरघा के सापेक्ष लगभग 43.3 लाख श्रमिकों को ही रोजगार मिला है, जो 1995–96 की अपेक्षा काफी कम है। प्रतिस्पर्धा, निर्यात में अनिश्चितता, बुनकर कारीगरों का परम्परागत कौशल बदलते बाजार के परिदृश्य के अनुकूल होने में असमर्थता इस गिरावट के सामान्य कारण हैं। (भट्टाचार्य एवं सेनः 2018:05)

भारत के विभिन्न राज्यों में पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, तमिनाडु व आन्ध्र प्रदेश के साथ–साथ उत्तर प्रदेश में भी हथकरघा उद्योग एक प्रमुख उद्योग है

---

[1] पी–एच0डी0 शोध छात्र (समाज कार्य), समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान एवं समाज कार्य विभाग, डा0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, मोहान रोड, लखनऊ (उ0प्र0)–226017

[2] सहायक आचार्य (समाज कार्य), समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान एवं समाज कार्य विभाग, डा0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, मोहान रोड, लखनऊ (उ0प्र0)–226017

जिसमें प्रदेश के विभिन्न जिलो के ग्रामीण एवं अर्द्ध शहरी क्षेत्रों की एक बड़ी जनसंख्या कार्यरत है जिन्हे बुनकर के रूप में जाना जाता है और इनकी जीविकोपार्जन का मुख्य व्यवसाय बुनाई का कार्य है। अधिकांश बुनकर समाज परम्परागत रूप से इस कार्य से जुड़े हुए हैं। उत्तर प्रदेश राज्य के विभिन्न जिलों में हथकरघा द्वारा वस्त्रों का उत्पादन किया जाता है जिसमें प्रमुख रूप से बिजनौर, इटावा, मेरठ, गाजियाबाद, हापुड़, अलीगढ़, फरूखाबाद, सीतापुर, बाराबंकी, अम्बेडकरनगर, मऊ, आजमगढ़, गोरखपुर एवं वाराणसी आदि जिले हैं। राज्य के उक्त जिलों में हथकरघा एवं पावरलूम के माध्यम से बुनकर समुदाय द्वारा विभिन्न प्रकार के उत्पाद तैयार किये जाते हैं जैसे–गमछा, लुंगी, शर्टिंग, तौलिया, खेस, चादर एवं साड़ी आदि। अम्बेडकरनगर जनपद के टाण्डा एवं जलालपुर नगर पालिका परिषद भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में अपने हथकरघा उत्पाद के लिए प्रसिद्ध है।

उत्तर प्रदेश राज्य का अम्बेडकरनगर जनपद अपने वस्त्र एवं बुनाई उद्योग के लिए प्रसिद्ध है इसमें विशेषकर टांडा टेरीकाट। हथकरघा एवं पावरलूम द्वारा उत्पादित वस्त्र व्यवसाय इस जनपद का मुख्य व्यवसाय है, जिसमें शर्टिंग क्लॉथ, इंटरलाइनिंग क्लॉथ, लुंगी, गमछा, अरबी रूमाल आदि का उत्पादन किया जाता है। जनपद में बुनाई उद्योग में स्वरोजगार की काफी अच्छी संभावनाएं हैं। बुनाई उद्योग अम्बेडकरनगर जनपद की अर्थव्यवस्था में प्रमुख स्थान रखता है।

वर्तमान समाज में फैशन का चलन में तेजी बढ़ा है इससे वस्त्र उद्योग भी अछूता नहीं है जिसके कारण इस उद्योग में जहां एक तरफ बदलाव की मांग बढ़ी है वहीं दूसरी तरफ विभिन्न चुनौतियों को भी जन्म दिया है। बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, बुनाई उद्योग की लाभप्रदता, बुनकरों के सामने आने वाली चुनौतियाँ, वित्तीय सहायता की उपलब्धता, नवीन विपणन रणनीति कुछ ऐसे मुद्दे हैं, वर्तमान में जिसका सामना बुनकर समाज कर रहा है। उक्त तथ्यों के आलोक में वर्तमान समय में बुनकर समाज द्वारा किस प्रकार की समस्याओं एवं नई–नई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं इसका अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र में विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

मठराज एवं राजकुमार (2008) ने अध्ययन में पाया कि रामनाथपुरम जनपद (तमिलनाडु) स्थित हथकरघा उद्योग उत्पादन सम्बन्धी अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है, जिनमें कुशल श्रमिकों की कमी, धागे की कीमतों में अस्थिरता, अपर्याप्त कार्यशील पूँजी तथा सरकारी ऋण की अनुपलब्धता प्रमुख हैं। इन समस्याओं के निस्तारण के लिए हथकरघों का आधुनिकीकरण, उत्पादन में नवीनता, लागत में कमी तथा विपणन प्रणाली में सुधार आदि किया जाना चाहिए। पॉल (2013) ने पश्चिम बंगाल के शक्ति–चालित करघों में कार्यरत बुनकरों के सामाजिक–आर्थिक विकास की स्थिति के विश्लेषण में पाया कि शक्ति–चालित करघों में कार्यरत अधिकांश बुनकर अशिक्षित हैं तथा उन्हें वस्त्र उद्योग के विकास एवं बुनकरों की सामाजिक सुरक्षा हेतु संचालित सरकारी योजनाओं की कोई जानकारी नहीं है, और न ही कच्चे माल के क्रय, ऋण तथा निर्मित माल के विपणन की कोई व्यवस्थित सुविधा है। इसी कारण वे हमेशा ग़रीबी में ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। वेंकटेश्वरन

(2014) ने तमिलनाडु राज्य के तिरुनवल्ली जनपद स्थित कल्लीडैकुरुची कस्बे की स्थानीय कृषि उत्पादों पर आधारित हथकरघा उद्योग की गतिशीलता और इस कार्य में संलग्न बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के विश्लेषण मे पाया गया कि अशिक्षा, वित्तीय बाधाएं, स्वास्थ्य समस्याएं तथा सरकारी सहायता का अभाव आदि कारक बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं।

लिटोन, तहमीदुल एवं सुब्रता (2016) ने बांग्लादेश में हथकरघा उद्योग की चुनौतियों एवं वर्तमान परिदृश्य के अध्ययन में पाया कि बांग्लादेश में लगभग 183512 बुनाई की इकाई है जिसमें लगभग 505556 लूम है। कुल 311851 लूम चालित हैं जो कुल लूम का लगभग 61.7 प्रतिशत है, शेष 193705 लूम बन्द पड़े हैं। शोधकर्ताओं ने यह भी पाया कि पूँजी की कमी, कच्चे माल की कमी, अपर्याप्त सरकारी सहयोग, कमज़ोर बाज़ार व्यवस्था आदि प्रमुख कारण हैं, जिसने हथकरघा उद्योग को लगभग बन्दी के कगार पर ला कर खड़ा कर दिया है। जैन एवं गेरा (2017) ने हथकरघा उद्योग पर वित्त की समस्या का प्रभाव एवं कमी जानने के लिए भारत के हथकरघा उद्योग का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि अधिकतर बुनकरों को उत्पादन, पैकिंग, मार्केटिंग एवं प्रचार–प्रसार से सम्बन्धित जानकारी का अभाव है, साथ ही हथकरघा उद्योग के प्रचार–प्रसार एवं अध्ययन के लिए और अधिक वित्त की आवश्यकता है।

उपरोक्त साहित्य समीक्षा के विश्लेषण से स्पष्ट है कि देश के विभिन्न क्षेत्रों के अधिकांश बुनकर निम्न सामाजिक–आर्थिक एवं ग्रामीण व अर्द्ध शहरी क्षेत्रों से आते हैं। जिसके कारण इनको अपने व्यवसाय में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उक्त तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में उत्तर प्रदेश के अम्बेडकरनगर जनपद में कार्यरत बुनकरों की समस्याओं एवं चुनौतियों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन नितांत आवश्यक है क्योंकि अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर बुनकर समुदाय की समस्याओं के समाधान हेतु प्रभावी रणनीतियां बनाते हुए इस वर्ग की चुनौतियों को कम किया जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य एवं शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना। बुनकर समुदाय की समस्याओं एवं चुनौतियो का अध्ययन करना और प्राप्त आंकड़ों के आधार पर सुझाव प्रस्तुत करना।

यह अध्ययन प्राथमिक आंकडों पर आधारित है, इस अध्ययन में वर्णनात्मक सह विश्लेषणात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु अम्बेडकरनगर जनपद के जलालपुर नगर पालिका परिषद के बुनकर बाहुल्य 2 मुहल्लों में निवासरत (जाफराबाद व बाजिदपुर) 40 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्य पूर्ण निदर्शन विधि से किया गया है। अध्ययन में प्राथमिक आंकड़ों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है साथ ही अध्ययन में द्वितीयक

स्रोतों का भी प्रयोग किया गया है और प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से एकत्रित आंकड़ों के आधार पर बुनकर समुदाय की वर्तमान समस्याओं एवं चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है।

बुनाई के क्षेत्र में हथकरघा व पावरलूम परम्परागत व्यवसाय है जो ग्रामीण एवं अर्द्ध शहरी क्षेत्र के लोगों को कृषि के बाद सर्वाधिक रोजगार प्रदान करता है। इस कार्य में संलग्न व्यक्ति बुनकर कहलाते है जो समाज के निम्न सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं। बुनाई उद्योग में समय के साथ–साथ नये नये तरह के परिवर्तन हुए है जिससे इस व्यवसाय में संलग्न बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति तो प्रभावित हुई है और साथ ही वर्तमान समय में इस वर्ग को विभिन्न प्रकार की समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण निम्नवत है।

तालिका संख्या 1.1

बुनकरों की आयु

क्रम सं0	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	20–30	6	12.50
2	31–40	17	42.50
3	41–50	12	30.00
4	51–60	5	15.00
	योग	40	100.00

तालिका संख्या–1.1 में यह दर्शाया गया है कि अध्ययन क्षेत्र के सर्वाधिक (42.50 प्रतिशत) उत्तरदाता 31–40 आयु वर्ग के बुनाई के कार्य में संलग्न हैं, 30.00 प्रतिशत 41–50 आयु वर्ग के व 15.00 प्रतिशत उत्तरदाता 20–30 आयु वर्ग तथा केवल (12.50 प्रतिशत) उत्तरदाता 51–60 आयु वर्ग के है, जो बुनाई के कार्य में संलग्न है।

अध्ययन क्षेत्र में अधिकांश (31–40) आयु वर्ग के लोग बुनाई के कार्य में संलिप्त हैं। जबकि युवा वर्ग की कम भागीदारी का मुख्य कारण बुनाई व्यवसाय के प्रति उनकी रूचि का न होना है एवं वृद्धजनों की इस कार्य में कम भागीदारी का कारण उनकी शारीरिक शक्ति में ह्रास है।

तालिका संख्या 1.2

बुनकरों का धर्म

क्रम सं0	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हिन्दू	11	27.50
2	मुस्लिम	29	72.50
	योग	40	100.00

तालिका संख्या–1.2 से यह ज्ञात होता है कि 72.50 प्रतिशत उत्तरदाता मुस्लिम धर्म के हैं तथा केवल (27.50 प्रतिशत) उत्तरदाता ही हिन्दू धर्म के हैं। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र अम्बेडकरनगर के जलालपुर नगर के चयनित मुहल्लों में बुनाई के कार्य में अधिकांशतः मुस्लिम धर्म के लोग ही संलग्न हैं तथा हिन्दू धर्म के कम लोगों ने बुनाई व्यवसाय को अपने प्राथमिक व्यवसाय के रूप में लिया है।

तालिका संख्या 1.3

बुनकरों की जाति

क्रम सं0	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	सामान्य	2	5.00
2	अन्य पिछड़ा वर्ग	29	72.50
3	अनुसूचित जाति	9	22.50
	योग	40	100.00

तालिका संख्या–1.3 में सर्वाधिक (72.50 प्रतिशत) उत्तरदाता अन्य पिछड़ा वर्ग के है, अनुसूचित जाति के 22.50 प्रतिशत उत्तरदाता हैं तथा केवल (2.75 प्रतिशत) उत्तरदाता सामान्य वर्ग के हैं। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक (72.50 प्रतिशत) बुनकर पिछड़ा वर्ग के हैं जिनका मुख्य व्यवसाय बुनाई है।

तालिका संख्या 1.4

बुनकरों की वैवाहिक स्थिति

क्रम सं0	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	विवाहित	29	72.50
2	अविवाहित	7	17.50
3	विधवा	3	7.50
4	विधुर	1	2.50
	योग	40	100.00

तालिका संख्या–1.4 में उत्तरदातओं की वैवाहिक स्थिति का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के विश्लेषण से पता चलता है कि बुनाई कार्य में लिप्त सर्वाधिक (72.50 प्रतिशत) उत्तरदाता विवाहित हैं, 17.50 प्रतिशत उत्तरदात अविवाहित हैं, 7.50 प्रतिशत उत्तरदाता विधवा तथा 2.50 प्रतिशत उत्तरदाता विधुर हैं।

तालिका संख्या 1.5

बुनकरों की शिक्षा की स्थिति

क्रम सं0	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	निरक्षर	7	17.50
2	प्राथमिक	11	27.50
3	जूनियर हाई स्कूल	8	20.00
4	हाई स्कूल	4	10.00
5	इण्टरमीडिएट	2	5.00
6	स्नातक	3	7.50
7	परास्नातक	5	12.50
	योग	40	100

तालिका संख्या–1.5 में उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति का विश्लेषण करने पर यह पाया गया है कि 27.50 प्रतिशत उत्तरदाता ने प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा ग्रहण किया है, 17.25 प्रतिशत निरक्षर हैं, 20.00 प्रतिशत ने जूनियर हाई स्कूल, 12.50 प्रतिशत ने परास्नातक, 10.00 प्रतिशत ने हाई स्कूल, 7.50 ने स्नातक तथा केवल (5.00 प्रतिशत) उत्तरदाता इण्टरमीडिएट तक शिक्षा ग्रहण किये हैं।

तालिका संख्या 1.6

बुनकर समुदाय की प्रमुख समस्याएं

क्रम सं0	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	सस्ते मानवीय श्रम की कमी	2	5.00
2	बिजली दर का महंगा होना	19	47.50
3	उत्पादित माल का उचित मूल्य न मिलना	6	15.00
4	पूँजी की अनुपलब्धता	2	5.00
5	उत्पादित माल की बिक्री न होना,	4	10.00

6	बाजार में उत्पाद की मांग कम	3	7.50
7	लाभ में कमी	1	2.50
8	कच्चे माल का महंगा होना	3	7.50
	योग	40	100.00

तालिका संख्या–1.6 में अध्ययन क्षेत्र के बुनकरों की प्रमुख समस्याओं का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के विश्लेषण में पाया गया कि सर्वाधिक (47.50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने प्रमुख समस्या के रूप में बिजली दर का महंगा होना माना है, 15.00 प्रतिशत ने उत्पादित माल का उचित दाम न मिलना, 10.00 प्रतिशत ने उत्पादित माल की विक्री न होना, 7.50 प्रतिशत ने क्रमशः बाजार में उत्पाद की मांग कम होना तथा कच्चे माल का महंगा होने को बुनकर समुदाय की प्रमुख समस्या माना है। अध्ययन के विश्लेषण से यह भी ज्ञात होता है कि 5.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने क्रमशः सस्ते मानवीय श्रम की अनुपलब्धता एवं पूँजी की कमी तथा केवल (2.50 प्रतिशत) ने व्यवसाय में लाभ की कमी को बुनकर समुदाय की प्रमुख समस्या माना है।

IJMRA

तालिका संख्या 1.7

बुनाई उद्योग की प्रमुख चुनौतियां

क्रम सं0	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	आढ़त का समाप्त हो जाना, बिचौलियों की सक्रियता व सरकारी खरीद की व्यवस्था न होना	5	12.50
2	पुराने यन्त्र व बाजार में कम दर पर मिल द्वारा उत्पादित माल की उपलब्धता	4	10.00
3	आय में निरन्तर गिरावट व बाजार में अत्यधिक प्रतिस्पर्धा,	5	12.50
4	श्रमिक संगठन का न होना	7	17.50

5	उत्पादित माल की बिक्री न होना	8	20.00
6	अत्यधिक पूंजी की आवश्यकता, कच्चे माल के दाम में अस्थिरता	11	27.50
	योग	40	100.00

तालिका संख्या–1.7 में अध्ययन क्षेत्र के बुनकरों की प्रमुख चुनौतियों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के विश्लेषण में पाया गया कि 27.50 प्रतिशत उत्तरदाताओ ने अत्यधिक पूंजी की आवश्यकता व कच्चे माल के दाम में अस्थिरता को इस व्यवसाय की प्रमुख चुनौती के रूप में माना है, 20.00 प्रतिशत ने उत्पादित माल की बिक्री न होना तथा 17.50 प्रतिशत ने श्रमिक संगठन का न होने को प्रमुख चुनौती माना है।

अध्ययन के विश्लेषण में यह भी पाया गया कि 12.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने क्रमशः आढ़त का समाप्त हो जाना, बिचौलियों की सक्रियता व सरकारी खरीद की व्यवस्था न होना एवं आय में निरन्तर गिरावट व बाजार में अत्यधिक प्रतिस्पर्धा तथा केवल (10.00 प्रतिशत) ने पुराने यन्त्र व बाजार में कम दर पर मिल द्वारा उत्पादित माल की उपलब्धता को बुनाई व्यवसाय की प्रमुख चुनौतियों के रूप में माना है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन में बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, समस्याएं एवं चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। साक्षात्कार से प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों के विश्लेषण में पाया गया कि अध्ययन क्षेत्र में बुनाई के व्यवसाय में संलिप्त 42.50 प्रतिशत बुनकर 31–40 आयु वर्ग के हैं तथा अधिकांश (72.50 प्रतिशत) बुनकर मुस्लिम समुदाय के पिछड़ा वर्ग से आते हैं जिसमें अन्सारी वर्ग के है। इस वर्ग का परम्परागत व्यवसाय बुनाई ही है। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र अम्बेडकरनगर के जलालपुर नगर पालिका परिषद के चयनित मुहल्लों में बुनाई के कार्य में अधिकांशतः मुस्लिम धर्म के अन्सारी बिरादरी के लोग ही संलग्न हैं तथा हिन्दू समुदाय के बहुत कम लोगों ने इस पेशे को अपने प्राथमिक व्यवसाय के रूप में लिया है। अध्ययन के विश्लेषण में यह भी पाया गया कि अधिकतर निरक्षर एवं निम्न शैक्षिक योग्यता वाले बुनकर ही बुनाई व्यवसाय में कार्यरत हैं।

अध्ययन क्षेत्र में सस्ते मानवीय श्रम की अनुपलब्धता, बिजली दर का महंगा होना, उत्पादित माल उचित मूल्य न मिलना, पूंजी की कमी, उत्पादित माल की विक्री न होना तथा बाजार में उत्पाद की मांग कम होना आदि बुनकरों की प्रमुख समस्याएं हैं, जिसमें अधिकांश (47.50 प्रतिशत) बुनकरों ने

IJMRA

बिजली दर का महंगा होना बुनकर समाज की आजीविका के मार्ग में आने वाली सबसे प्रमुख समस्या माना है।

प्राथमिक आंकड़ों के विश्लेषण में पाया गया कि अध्ययन क्षेत्र के बुनकर समाज की विभिन्न चुनौतियों में आढ़त का समाप्त हो जाना, बिचौलियों की सक्रियता, सरकारी खरीद की व्यवस्था न होना, पुराने यन्त्र, बाजार में कम दर पर मिल द्वारा उत्पादित माल की उपलब्धता, आय में निरन्तर गिरावट, बाजार में अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, श्रमिक संगठन का न होना, उत्पादित माल की विक्री न होना, अत्यधिक पूंजी की आवश्यकता एवं कच्चे माल के दाम में अस्थिरता आदि हैं, जिसमें अधिकांश (27.50 प्रतिशत) बुनकरों ने अत्यधिक पूंजी की आवश्यकता एवं कच्चे माल के दामों में अस्थिरता को इस उद्योग की सबसे प्रमुख चुनौती के रूप में माना है।

उक्त विश्लेषित तथ्यों की पुष्टि पूर्व में सम्पादित मठराज एवं राजकुमार (2008), पॉल (2013) व जैन एवं गेरा (2017) के अध्ययनों से होती है, क्योंकि पूर्व में बुनकर समाज के समक्ष कच्चे माल, पूंजी, विक्रय, प्रतिस्पर्धा एवं बिजली दर सम्बन्धी जो समस्याएं एवं चुनौतियां थीं वह अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान समय में भी व्याप्त हैं। इसलिए बुनकर समुदाय की उक्त समस्याओं के समाधान हेतु सरकार को व्यापक रणनीति बनाने की आवश्यकता है। उक्त वर्ग की समस्यओं के समाधान हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुव किये जा रहे हैं।

- बुनकरों को सस्ती दर पर बिजली उपलब्ध करायी जाय जिससे यह समुदाय कम लागत में अच्छा एवं अधिक उत्पादन कर सके।
- बुनाई व्यवसाय में लिप्त बुनकरों को पर्याप्त एवं सस्ते मूल्य पर कच्चा माल उपलब्ध कराया जाय।
- सरकार द्वारा बुनकरों के उत्पादित उत्पाद का उचित मूल्य निर्धारण किया जाय।
- उत्पादित माल की विक्री हेतु सरकारी डिपो खोला जाए जिससे बुनकर समाज की विक्रय सम्बन्धी समस्यओं का समाधान हो सके।
- बुनकरों को नई मशीनों को क्रय करने के लिए सब्सिडी प्रदान की जाय तथा सहकारी समितियों एवं बैंक से सस्ते दर पर पूंजी हेतु ऋण उपलब्ध कराया जाय।
- केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित बुनकरों के कल्याण सम्बन्धी कार्यक्रमों एवं योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाय।
- बाजार की मांग के अनुरूप उत्पादन करने हेतु बुनकरों को नये कौशल विकास हेतु समय समय पर सरकार एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया जाय।

सन्दर्भ

1. मिश्रा एवं महापात्रा (2019), ‘‘ए स्टडी ऑन प्रजेन्ट कन्डीशन ऑफ द वीवर ऑफ हैण्डलूम इण्डस्ट्रीः ए रिविव्यु’’, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इण्टरडिसिप्लिनरी रिसर्ज ऐण्ड इनोवेशन,* वाल्युम 7, इश्यु 2, पृ0 325–331.
2. भट्टाचार्य एवं सेन (2018), ‘‘प्राइड एण्ड प्रीज्युडिसः द कण्डीशल ऑफ हैण्डलूम वीवर्स इन वेस्ट बंगाल’’, सेन्टर फार सस्टेनबल डेवेलपमेंट, अजीम प्रेम जी यूनिवर्सिटी, पृ0–05
3. मठराज, एस0पी0 एण्ड राजकुमार, पी0 (2008), ‘‘एनालिटिकल स्टडी ऑफ हैंडलूम प्रोडक्टशन एण्ड मार्केटिंग’’. *तमिलनाडु जर्नल ऑफ को–आपरेशन.* पृ0 69–73.
4. पॉल, उत्तम (2013), ‘‘ए स्टडी ऑफ सोशियो–इकोनॉमिक स्टेटस ऑफ वर्कर्स इन दि न्आर्गनाइज्ड पॉवरलूम सेक्टर ऑफ वेस्ट बंगाल’’, *ग्लोबल एडवांस रिसर्च जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस,* वा0–2, नं0–2, फरवरी. पृ0 65–77.
5. वेंकेटश्वरन, ए0 (2014), ‘‘ए सोशियो इकोनॉमिक कंडीशन ऑफ दि हैण्डलूम वेविंग इन कल्लीडैकुरुची ऑफ तिरुनवल्ली डिस्ट्रिक्ट’’. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एण्ड ह्यूमिनिटीज रिसर्च,* वा0–2, इश्यू–2, अप्रैल. पृ0 38–49.
6. लिटोन, मो0 आर0 इस्लाम, इस्लाम, तहमीदुल एवं शाह, सुब्रता (2016), ‘‘प्रजेन्ट सिनारियो एण्ड फ्युचर चैलेन्जेज इन हैण्डलूम इण्डस्ट्री इन बांग्लादेश’’, *सोशल साइंस पब्लिशिंग ग्रुप,* वा0–5, न0–5, दिसम्बर, पृ0 70–76.
7. जैन, डा0 धर्मचन्द एवं गेरा, मिस रितु (2017), ‘‘ऐन एनालिटिकल स्टडी ऑफ हैण्डलूम इण्डस्ट्री आफ इण्डिया’’, *इण्टर नेशनल कान्फ्रेन्स आन रिसर्च इन साइन्स, टेक्नोलोजी एण्ड मैनेजमेण्ट,* दादाबरी, कोटा, राजस्थान, 22–23 जनवरी, पृ0 292–298.